निराला की काव्यभाषा।

प्रश्न — ओज, पौरुष और करुणा के कवि।
अथवा — विद्रोही कवि के रूप में निराला?

उत्तर- साहित्यकार या कवि की अर्थमयी भावमग्न चेतना जब उद्भूत होकर मानस के बाहर प्रकट होना चाहती है तब वह शब्दों में नहीं अपितु वाक्यों में ही अपने स्वरूप को उपस्थित करती है। अर्थ की यह सरस एवं चमत्कारमयी अभिव्यक्ति ही साहित्य कहलाती है। अर्थ और वाक्य का यह योग ही तो साहित्य नाम से विख्यात हुआ है। अर्थमयी चेतना का बैखरी रूप ही तो भाषा है। कवि की यह चेतना जब रसमयी बन जाती है तो उस की अभिव्यक्ति भाषा ही नहीं काव्यभाषा कहलाती है। इसलिए सामान्य साहित्य भाषा से काव्य भाषा से सदा अधिक सरस तथा प्रभावशालिनी होती है। उसके प्रभाव का मूल कारण उसका अपना सौन्दर्य और रमणीयता है। काव्य भाषा की रमणीयता वाक्यों या वाक्यों में आये हुए शब्दों की शक्तियों पर ही विशेष रूप से निर्भर करता है। आचार्यों ने इन्हें अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नाम से अभिहित किया है।

वाक्य से पद और पद से शब्द को स्वतंत्र समझा जा सकता है। एक प्रकार से शब्द ही वाणी का पर्याय है। हमारे शास्त्रों में जो अनमोल वाणी की प्रशंसा है उनमें से 'कामधेनु' और 'गंगा' नाम बड़े सार्थक हैं। शब्द धेनु आदि मानव समाज से आज तक निरन्तर दुही जा रही है किन्तु उसके दुग्ध में लेश मात्र भी कमी नहीं आयी। काव्य भाषा में तो यह गंगा अनेक रूप धारण करके विभिन्न ऊँचाई के भाव-पदों में अर्थ की वर्षा किया करती है। वाणी की इस वर्षा में स्नान करके बिना सहृदय पाठक को आनन्द ही नहीं अपितु लोकोत्तरानन्द प्राप्त होता है। इसलिए वाणी की अर्थ वर्षा का गान-गान नहीं

जल नहीं अमृत है। महाकवि भवभूति ने भाषा को विशेषता अमृता लिखकर उपर्युक्त कथन की ही समर्थन किया था।

एक बार अकबर बादशाह ने बीरबल से पूछा कि जलों में जल कौन सा श्रेष्ठ है? तो बीरबल ने कहा कि यमुना जल। इस पर बादशाह अकबर ने मुस्कराते हुए कहा कि कहो बीरबल! दुनिया तो श्रेष्ठता तथा पवित्रता के लिए जलों में जल गंगाजल की है और तुम यमुना जल को सर्वोत्तम बता रहे हो। बीरबल ने फिर अपनी ही बात को दुहराते हुए निवेदन किया- बादशाह सलामत जलों में जल तो यमुना जल ही है। गंगा जल जल नहीं है वह तो अमृत है। जलों में उस की गिनती करना अपने ऊपर पाप चढ़ाना है। इसी दृष्टि बिन्दु से यह कहा जा सकता है कि काव्येतर विधाओं की भाषा यदि जल है तो काव्य भाषा 'अमृत' है।

वैसे तो पद संयोजना से भाषा को कोमल मधुर और कठोर बनाया जा सकता है किन्तु कुछ भाषायें अपनी प्रकृति के अनुसार स्वयं ही कोमल तथा कठोर हुआ करती हैं। अलीगढ़ जनपद की बोली कोमल है तो मेरठ जनपद की कठोर। ठीक इसी प्रकार यदि कोई कवि वैदर्भी रीति या माधुर्य गुणारीति का प्रेमी है तो दूसरा गौड़ी रीति और ओज गुण ~~रीति~~ का और तीसरा पांचाली रीति और प्रसाद गुण का। ऐसा भी होता है कि वस्तु सामग्री अर्थात वर्ण्य विषय के अनुरूप कवि की भाषा अभिव्यक्ति विभिन्न रूपों

बन जाती है। किसीभी गीतकार कवि के गीतों
में स्वाभाविकता, प्रवाह से एक विशेष स्वर भी
सुनाई पड़ता है। यदि हम प्रवाह माधुर्य
निराला जी के काव्य ग्रन्थों परिमल, गीतिका,
तुलसीदास, अनामिका, कुकुरमुत्ता, अणिमा,
बेला, नये पत्ते, आराधना और अर्चना का
गीत रचना की दृष्टि से अध्ययन करें तो
विदित होगा कि उनमें शब्द संयोजना भाव
आवश्यकतानुसार कोमल स्वर से और कठोर हैं।
फिर भी हमारे इस कवि का अपना स्वर है
जो अपना विशिष्ट स्थान रखता है। इनकी
रचनाओं में ओज का प्राधान्य स्पष्टतः दिखायी
पड़ता है। इस प्रकार कवि के शब्द विन्यास
को गीत रीति के माध्यम से ही अभिव्यक्त
प्राप्त करना स्वाभाविक प्रिय है।

अर्थ की प्रधानता शब्द में अपनी निजी
कोमलता माधुर्यता अथवा कठोरता हुआ करती
है। विषय का अनुभाव इस शब्द का पक्ष
विन्यास हुआ करता है। ध्वनि और प्रतिपाद्य
शब्द अर्थ में समान होते हुए भी श्रोता के
मानस पटल पर अपना प्रभाव पृथक पृथक
प्रकट करते हैं। ध्वनि माधुर्य को प्रकट करता है
तो माधुर्य ओज का। प्रतिपाद्य का व्यंजना,
संयोग और विभावादि वर्ण का पूर्ण अवयवों
प्रकट एक निराली ध्वन्यात्मक प्रभावता की
प्रकृति का अध्ययन करने के उपरान्त ही तो
आचार्य ने यह घोषित किया था कि जब काव्य
में पद-विन्यास के समय प्रत्येक वर्ग के प्रथम
वर्ण के साथ द्वितीय वर्ण की संयोग हो
अथवा तृतीय वर्ण और [illegible] के
साथ आते और उनकी लम्बी लम्बी
समासान्त पदावली भी हो तो वह रचना

ओज गुण पुरुष कहलाता है। स्त्रीत्व वर्णों में
में पौरुष और ओज रहता है। तभी तो वेद
शब्द पुल्लिंग और उसका पर्यायवाची श्रुति
शब्द स्त्रीलिंग है।

वर्णों की ध्वनि के आधार पर हम यदि गहरी और पैनी निगाह से देखें तो पर्यायवाची दो शब्द भी अपना अलग-अलग रखते हैं। शब्दार्थ मानी कुशल कवि के लिए 'पानी' और 'जल' लड़ाई और युद्ध 'शंकर' और 'रुद्र', निर्मल और स्वच्छ का एक अर्थ नहीं है। इसलिए वैदर्भ ऋषि मुनि ने कहा है कि — शब्द में सौन्दर्य का एक प्रकाश भासक देता है जिस प्रकार बारीक तथा भीने वस्त्र में से शरीर की कान्ति दृष्टि गोचर हुआ करती है। जैसे शब्द आत्मा के लिए अर्थ देवता है और भावक के लिए अर्थ आत्मा का आधार है। उनका चिर की व्यक्त शब्द तत्व है। किस शब्द में विद्यार्थी प्रयुक्त ओज और किसमें माधुर्य है। इसे निराला की लेखनी पूरी तरह परख लेती है। वह समुचित तथा समुपयुक्त शब्दों में अर्थ को अभिव्यक्त करना जानती है। नर और नारी अथवा पुरुष और प्रकृति के रूप और सौन्दर्य के सम्बन्ध को उपस्थित करने वाले चित्र कवि ने 'तुम और मैं' शीर्षक कविता में जिस शब्दार्थ कौशल के साथ चित्रित किये वे सम्पूर्ण हिन्दी साहित्य में अप्रतिम हैं। नर का ओज एवं पौरुष और नारी की सरलता एवं कोमलता भिन्न प्रतीकों एवं उपमानों से व्यक्त की जा सकती है। उनके समुपयुक्त पर्यायवाची शब्दों में कवि ने चुन-चुन कर प्रयुक्त किया है। ओज और माधुर्य की

माधुर्य का एक साथ आनन्द यदि सच्ची भावुकता में प्राप्त किया जा सकता है तो निराला जी की निम्न कविता 'तुम और मैं' में —

"तुम तुंग हिमालय शृंग
और मैं चंचल गति सुर सरिता
तुम विमल हृदय उच्छ्वास
और मैं कान्त कामिनी कविता
तुम रण ताण्डव उन्माद-नृत्य
मैं मुखर मधुर नूपुर ध्वनि
तुम नाद वेद ओंकार
मैं कवि शृंगार शिरोमणि।"

शुद्ध गौणी रीति परुषा वृत्ति और ओज गुण की प्रधानता की महाप्राणता यदि कोई देखना चाहता है तो उसे महाप्राण निराला जी की "राम की शक्ति पूजा" शीर्षक कविता को अवश्य पढ़ना चाहिए। इससे पाठक को विदित हो जायेगा कि निराला जी के नाम के पहले 'महाप्राण' विशेषण क्यों जोड़ा गया है —

"राघव लाघव रावण वारण गत युग्म प्रहर,
उद्धत लंकापति मर्दित कपि दल बल विस्तर
अनिमेष राम विश्वजिद् दिव्य शर भंग भाव
विद्धांग बद्ध कोदण्ड मुष्टि खर रुधिर स्राव।
रावण प्रहार दुर्वार विकल वानर दल बल
मूर्छित सुग्रीवांगद भीषण गवाक्ष गय नल"

'तुलसीदास' नामक खण्डकाव्य में कविवर निराला जी ने परुषा तथा कोमला वृत्तियों का गंगा यमुनी सम्मेलन उपस्थित किया है। अपने स्वभाव के अनुसार, उसमें भी परुषा वृत्ति की ओर ही अधिक झुकाव हुआ मालूम पड़ता है। पुस्तक के प्रारम्भ में ही निराला जी अपनी भावमयी चेतना को इन शब्दों में प्रकट करते हैं —

भारत के नभ का प्रभापूर्य
शीतलच्छाय सांस्कृतिक सूर्य।

अस्तमित आज रे तमस्तूर्य दिङ्मण्डल।

संयुक्त व्यंजन एवं दीर्घ समासों की प्रधानता, वीर, भयानक, रौद्र रसों का सफल उपस्थित करने में सक्षम सिद्ध होती है। शृंगार और करुणारस के लिए समास रहित सरल पदावली ही उपयुक्त रहती है। यों निराला जी के अंतर का कवि अच्छी तरह जानता है। इसलिए 'अनामिका' और 'गीतिका' नामक प्रथम पुस्तकों की अनेक कविताएँ ऐसी मिलती जिन की भाषा पांचाली रीति समन्वित कोमल कान्ति से परिपूर्ण है। सारांश यह है कि इनकी पदरचना बस सरल और उदार गुण युक्त पायी जाती है। प्रिया से भरित की सरलता देखिये—

मेरे इस जीवन की है
तू सरस साधना कविता
मेरे तरु की है तू
कुसुमित प्रिये कल्पना लतिका 'अनामिका'

पत्थर तोड़ती हुई मजदूरनी का करुणा चित्र देखिये —

वह तोड़ती पत्थर,
देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर,
वह तोड़ती पत्थर।

फिर 'गीतिका' से एक उदाहरण लिया जाय

सोचता उन नयनों का प्यार,
अजानक भरा सकल संसार
आज और ही और संसार
और ही सुरभित मंजु प्रभात।

कवि के उद्भूत चेतना की चित्र जब शब्द-रचना कला की माध्यम से कविता का रूप धारण करता है तब ऐसे विलक्षण दृश्य भी आते हैं कि पाठकों की धारणा शक्ति भी हार मानकर बैठ जाती है। यह सामर्थ्य केवल कवि के मानस की प्रतिभा है।

वेगवान पवन पाकर शब्द-वाष्प की भाँति ऊपर को उठता है और फिर जलद की भाँति भारी होकर ऐसी अर्थ-वर्षा करता है कि इस के उपरान्त कवि चेतना के चित्र इन्द्रधनुष की तरह स्वतः ही माधुर्य वक्ष में दृष्टिगोचर होने लगते हैं। ये माधुर चित्र लक्षणा शक्ति चित्रित किया करती है। काव्यशास्त्र के पंडितों आचार्यों की जननी रही लक्षणा शक्ति है। लक्षणा ही तो नेत्रों में कमल मीन खंजन का आरोप करती है। काव्य रचना के मार्ग में जहाँ लक्षणा थककर बैठ जाती है वहाँ व्यंजना शक्ति के सहारे ही कवि की कला प्रकट होती है। वास्तव में भाषा का अर्थ जगत इस का लक्ष्यार्थ तथा व्यंग्यार्थ ही है। कवि-मानस का स्वाभाविक गुण अर्थ व्यंजना (ध्वनि) के साथ आता है। इसलिए प्रतिभाशील कुशल कवि अपने भावों की व्यंजना के माध्यम से चित्रित बनाया करते हैं और शब्द की लहर में अर्थ का विस्तार भरा करते हैं। कवि की संध्या सुन्दरी अम्बर-पथ से किस प्रकार चलती है, उस की रूपशय्या और शब्दों का व्यंजना व्यापार निम्नलिखित पंक्तियों में देखें —

अलसाता की सी लता
किन्तु कोमलता की वह कली
सखी नीरवता के कंधों पर डाले बाँह
छाँह-सी अम्बर-पथ से चली।

उक्त पंक्तियों में शब्द अपने अभिप्राय की प्रधानता का परित्याग कर के कुछ विशेष अर्थों को व्यक्त कर रहे हैं। इसलिए यह शब्द योजना ध्वनि-काव्य कहलाने की अधिकारिणी है। संध्या की सखी नीरवता है। मैत्री एक सी प्रकृति वालों में ही हुआ करती है अतः इस से ध्वनित है कि संध्या स्वभाव से शांत प्रकृति वाली है

सखियाँ प्रायः कुमारियों की ही होती हैं विवाहित नारियों की सखियों की इतनी आवश्यकता नहीं होती। अतः सखी का साथ में होना यह व्यंजित करता है कि संध्या सुंदरी अभी कुंवारी ही है। सखी (नीरवता) के कंधों पर बाँह डालना यह भी प्रकट करता है कि संध्या सुंदरी अभी मुग्धा नव यौवना है और स्वभाव भी अल्हड़ है। सखी के कंधे पर बाँह डाले हुए आना यह भी ध्वनित करता है कि सखी के साथ संध्या सुन्दरी की बड़ी गहरी मित्रता है। संध्या के लिए छाँह का उपमान प्रस्तुत करने से यह व्यंजित है कि संध्या शरीर से बड़ी पतली है। अम्बर पथ से नीचे उतरने में संध्या ने अपने सखी के कंधों का सहारा लिया है अतः वह सुकुमारी और कोमलांगी भी है। यदि हिन्दी भाषा की उर्दू शैली में कहें तो यह कहा जा सकता है कि शाम एक नाजनीन और दिलबर है। संध्या सुंदरी न तो मजदूर की नारी है और उसे कभी कठोर धरती पर चलने का काम ही पड़ा है जिससे उसका शरीर स्थूल और कठोर बनता अथवा कठोरता सहने का अभ्यासी होता। उक्त पंक्तियों में महाकवि निराला जी ने मानवीकरण के द्वारा हमें सखियाँ सहित संध्या को कुमारी का रूप देकर कमाल कर दिया है। यहाँ अनेक वस्तु ध्वनियों का सम्मेलन दिखाई पड़ता है। श्री निराला जी के ऐसे ही ध्वनि-परक चित्रों पर मुग्ध होकर जयशंकर प्रसाद जी ने निराला जी के काव्य के सम्बन्ध में लिखा था — "चित्रों की रेखायें स्पष्ट वर्णों का विकास भास्वर है। धार्मिकता पर उन्माद और व्यंजना मूर्तिवती है।।"

महाकवि निराला की भाषा संस्कृत के तत्सम शब्दों से परिपूर्ण साहित्यिक खड़ी बोली है जिसे संगीत के साँचे पर सुशोभित करके शृंगार की मधुरिमा और वीर का ओज प्रदान किया गया है। साहित्यिक खड़ी बोली की पहिचान निराला जी की कविताओं से होती है। उनकी रचना में बौद्धिक तत्व अधिक है वहाँ भाषा जटिल और दुरूह हो गई है किन्तु हृदय तत्व की प्रधानता प्राप्त कर वह संस्कृत की ललित एवं कोमलकांत पदावली की पावन लहरी की अभिव्यक्ति भी हो गई है। वह कोमलकांत पदावली विशेषतः सांस्कृतिक तत्वों को लेकर चली है।

बंगला भाषा के कुछ शब्द निराला जी ने बड़े सुन्दर ढंग से प्रयुक्त किये हैं। फ़ारसी आदि विदेशी शब्दों को तो बड़े विचार के साथ ही प्रयुक्त करते हैं। उन शब्दों के प्रयोग से भाषा प्राणवंत हो गई है।

कला मर्मज्ञ सुन्दर कवि की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह सदा पूरी सामर्थ्य तथा अर्थ व्यंजक शब्दों का ही प्रयोग किया करता है। शब्दों के साथ में अनेक विशेषण शब्दों का प्रयोग कवि असमर्थता एवं अल्पज्ञता का द्योतक है। काव्य कवि ~~अधिक~~ ऐसा नहीं होते और विशेषणों का अधिक प्रयोग भी नहीं करते। शब्द-शक्ति कुशल कवि नील कमल के स्थान पर 'इन्दीवर' और पूर्णिमा के चंद के स्थान पर "राकेश" लिखना अधिक अच्छा मानता है। यह बात हमें निराला जी की प्रत्येक कृतियों में भी मिलती है। अनुप्रास भरी शब्द योजना के वे सम्राट ही हैं—

वसन वासनाओं के रंग-रंग।

नीरज नील नयन विकारा ।
तरंग की तरणी तान भरे 'अनामिका'

अंत में सारांश रूप में यही निवेदन किया जा सकता है कि निराला जी की लेखनी ने खड़ी बोली हिन्दी को नवीन संगीत शैली के गीत प्रदान किये हैं जिनके गीतों के शब्दों में ओज और माधुर्य भरा है इनके गीतों में ध्वनि मूलक अलंकारों की संगीतमयी शोभा देखते ही बनती है।

मौन रही हार
प्रिय पथ चलती सब कहते शृंगार!
कण कण कर कंकण किण किण रव किंकिणी
रणन रणन नूपुर लाज लौट रंकिणी।

खड़ी बोली की कविता को छंद के बंधन से मुक्त कर के श्री निराला जी ने इसे नये स्वरूप तथा अभिनव संगीत शैली प्रदान की है। 'कुकुरमुत्ता' में हमें कवि की विचित्र व्यंग्यात्मक शैली के दर्शन होते हैं काव्य में नये नये प्रतीकों का प्रयोग करके स्वयं महाकवि ने साबित किया ॥